
shrInivAsagadyam

श्रीनिवासगद्यम्

Document Information

Text title : shrIshrInivAsagadyam

File name : shrInivAsagadyam.itx

Category : gadyam, vishhnu, venkateshwara, stotra, vishnu

Location : doc_vishhnu

Author : shrIraNgasUri

Transliterated by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at yahoo.com

Proofread by : Malleswara Rao Yellapragada malleswararaoy at yahoo.com

Source : Venkatesha Kavyakalapa

Latest update : June 10, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

February 2, 2024

sanskritdocuments.org

श्रीनिवासगद्यम्



॥ श्रीरस्तु ॥

श्रीवेङ्कटाद्रिनिलयः कमलाकामुकः पुमान् ।

अभङ्गुर विभूतिर्नस्तरङ्गयतु मङ्गलम्

श्रीमदम्बिल मडीमण्डल मण्डन धरणिधर मण्डलाभण्डलस्य ॥ १ ॥

निम्बिल सुरासुर वन्दित वराह क्षेत्र विभूषणस्य ॥ २ ॥

शेषायल गरुडायल वृषभायल नारायणायलाञ्जनायलादि शिम्भरि

मालाकुलस्य ॥ ३ ॥

नाथमुष्ण बोधनिधि वीथिगुण साभरण सत्त्वनिधि तत्त्वनिधि

भक्तिगुणपूर्णा श्रीशैल पूर्णा गुणवशंवद परमपुरुष कृपापूर

विभ्रमदतुङ्गशङ्ख गलद्गन गङ्गासमालिङ्गितस्य ॥ ४ ॥

सीमातिगुण रामानुज मुनि नामाङ्कित बहुभूमाश्रय सुरधामा लयवनरामा

यतवनसीमा परिवृत विशङ्कटतट निरन्तर विजम्बित भक्तिरस

निर्जरानन्तार्याडार्य प्रस्रवाण धारापूर विभ्रमद सलिलभर भरित

महा तटाकमण्डितस्य ॥ ५ ॥

कलिकर्दममलमर्दन कलितोद्यम विलसद्यमनियमादिम मुनिगण निषेव्यमाण

प्रत्यक्षीभवन्निसलिल समञ्जननमञ्जन निम्बिल पापनाशन पापनाशन

तिर्याध्यासितस्य ॥ ६ ॥

मुरारि सेवक जराधिपीडित निरार्तिञ्जवन निराशभूसुर वरातिसुन्दर

सुराङ्गना रतिकराङ्ग सौष्ठव कुमारताकृति कुमारतारक

समापनोद्य धमानपातक महापदामय विडापनोदित सकल भुवन विदित

कुमारधाराभिधान तिर्याधिष्ठितस्य ॥ ७ ॥

धरणि तलगत सकललुत कलिलशुभ सलिलगत बहुलविविध मललुति

यतुर रुचिरतर विलोकमात्रविदलित विविध महापातक स्वामिपुष्करिणी

समेतस्य ॥ ८ ॥

भङ्गुसङ्घट नरकावट पतद्दुल्लट कलिकङ्घट कलुषोद्भट जनपातक
विनिपातक रुचिनाटक करडाटक कलशाद्धत कमलारत शुभमज्जन
जलसज्जन भरित निजद्दुरित छतिनिरत जनसतत निर्गलपेयीयमान
सलिल सम्भृत विशङ्घट कटाडतीर्थ भूषितस्य ॥ ८ ॥

अेवमादिम भुरिमञ्जिम सर्वपातक गर्वडापक सिन्धुडम्भर
डारिशम्भर विविधविपुल पुण्यतीर्थ निवड निवासस्य ॥ १० ॥

श्री वेङ्कटाचलस्य ॥ ११ ॥

शिभरशेभर मडाकल्प शाप्पी ॥ १२ ॥

भर्वाभवदतिगर्वे कृतगुरुमेर्विश
गिरिभुर्भोर्वाधरकुलदर्वाकर दयितोर्वा धरशिभरोर्वा सतत
सद्दुर्वा कृतियणनवधनगर्वयर्वाणनिपुण तनुकिरण मसृष्टित
गिरिशिभरशेभर तरुनिकर तिमिरः ॥ १३ ॥

वाणीपति शर्वाणीदयितेन्द्राणीश्वरभुभनाणीयो रसवेणी निभ शुभवाणी
नुतमडिमाणी यस्तरकोणी भवदभिलभुवन भवनोदरः ॥ १४ ॥

वैमानिक गुरुभूमाधिक गुण रामानुज कृतधामाकर करधामारिदर
ललामाच्छ कनक दामायित निजरामालयनवडिसलयमय तोरण
मालायितवनमालाधरः ॥ १५ ॥

कालाम्बुद मालानिभ नीलालक जालावृत बालाञ्ज सलीलामलङ्कालाङ्क
समूलामृत धाराद्वयावधीरण धीरललिततर विशदतर धन
धनसारमयोर्ध्वपुण्ड्र रेभाद्वयरुचिरः ॥ १६ ॥

सुविकस्वरदलभास्वरकमलोदरगतमेदुरनवकेसरततिभासुरपरिपिञ्जर-
कनकाम्बरकवितादरललितोदरतदालम्भजम्भरिपुमिस्तिम्भ-
गम्भीरिमदम्भस्तम्भन समुज्जम्भमाणीपीवरोरुयुगल-
तदालम्भपृथुलकदलीमुकुलमदडरणज्ज्घालज्ज्घायुगलः ॥ १७ ॥

नव्यदल भव्यकल पीतमल शोणिमल सन्मृदुल सत्तिसलयाम्भुजलकारि
बलशोणतल पत्तमलनिजाम्रय बलभन्दीकृत शरदिन्दुमाण्डली
विल्लमदादल्लशुल्ल पुनर्भवाधिष्ठिताङ्गुली
गाढनिपीडित पद्मासनः ॥ १८ ॥

जानुतलावधिलम्बिविडम्बित वारणशुण्डा दण्डविजृम्बित नीलमणिमय
कल्पकशाभा विभ्रमदायि मृणाललतायत समुज्ज्वलतर कनक
वलथवेत्लितैकतर बाहुदण्डयुगलः ॥ १९ ॥

युगपद्दुदित कोटिभरकर छिमकर मण्डल ज्ञाज्ज्वल्यमान सुदर्शन
पाञ्चजन्य समुत्तुङ्गित शङ्खापरबाहुयुगलः ॥ २० ॥

अभिनवशाशा समुत्तेजित मडामडानीलभाण्ड मण्डभाण्डननिपुण नवीन
परितम कार्त्तस्वरकवयित मडनीय पृथुलसालग्राम परम्परागुम्फित
नाभिमण्डलपर्यन्त लम्बमानप्रालम्बदीप्ति
समालम्बित विशालवक्षस्थलः ॥ २१ ॥

गङ्गाञ्जस्तुङ्गाङ्गतिभङ्गावलिभङ्गावळ सौधावलि बावळ धारानिभ
डारावलि दूराडत गेडान्तरमोडावळ मडिम मसृणित मडातिमिरः ॥ २२ ॥

पिङ्गाङ्गतिभङ्गारुनिभाङ्गार दवाङ्गामल निष्कासित दृष्कार्यध
निष्कावलि दीपप्रभ नीपञ्चवि तापप्रद कनकमालिका
पिशङ्गितसर्वाङ्गः ॥ २३ ॥

नवदलित दलवलित मृदुललित कमलतति मण्डविडति यतुरतर
पृथुलतर सरसतर कनकसर मयरुथिर
कण्ठिका कमनीयकण्ठः ॥ २४ ॥

वाताशनाधिपतिशयन कमनपरिथरण रतिसमेताभिल इणधरतति
मतिकर कनकमय नागाभरण परिवीताभिलाङ्गावगमित शयन भूताडिराज
जातातिशयः ॥ २५ ॥

रविकोटी परिपाटी धरकोटिर वराटीडितवाटि रसघाटि धरमणिगण डिरण
विसरण सततविधुत तिमिरमोडगर्भगोळः ॥ २६ ॥

अपरिमित विविधभुवनभरिताभाण्ड ब्रह्माण्डमण्डल पिचण्डिलः ॥ २७ ॥

आर्यधुर्यानन्तार्थ पवित्रभनित्रपात पात्रीकृत निजयुबुकगत प्राण्डिकण
विभूषणवळन सूचितश्रित जनवत्सलतातिशयः ॥ २८ ॥

मडुडिण्डिम उमरुञ्जर काडली पटडावली मृदुमर्दलालि मृदङ्ग
दुन्दुभि ढङ्किकामुभ लृधवाधक मधुरमङ्गल नादमेदुर विसृमर
सरसगान रसरुथिर सन्ततसन्तन्यमान नित्योत्सव पक्षोत्सव मासोत्सव

संवत्सरोत्सवादि विविधोत्सव इतानन्तः ॥ २८ ॥

श्रीमदानन्दनिलयविमानवासः ॥ ३० ॥

सततपद्मालयापदपद्मरेणुसञ्चित वक्षस्थलपटवासः ॥ ३१ ॥

श्रीश्रीनिवासस्सुप्रसन्नो विजयताम् ॥ ३२ ॥

श्रीरङ्गसूरिशेठं श्रीशैलानन्तसुरिवंशेन ।

भक्त्या रचितं लुधम् गधम् गृह्णातु वेङ्कटेशानः ॥

॥ श्री श्रीनिवासगधं सम्पूर्णम् ॥

From a telugu book veNkaTeshakAvyakalApa

Encoded and proofread by Malleswara Rao Yellapragada

malleswararaoy at yahoo.com



shrInivAsagadyam

pdf was typeset on February 2, 2024



Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

